विविधा

कवि परिचय :

स. ही. वात्स्यायन अज्ञेय

अज्ञेय जी बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार हैं। इनका जन्म सन् 1911 में हुआ था। ये चित्रकला, मूर्ति कला पुरातत्व और विज्ञान आदि विषयों में केवल सक्रिय रुचि ही नहीं रखते बल्कि सृजन भी करते हैं। नवीन मूल्यों की खोज का आग्रह उनकी रचनाओं में सर्वत्र व्याप्त है। सदा ही कुछ असाधारण की देन का यत्न उन्होंने किया। आप प्रयोगवाद के पुरोधा हैं। अज्ञेय की रुचि कविता लेखन में प्रारंभ से ही थी। विद्यार्थी जीवन में ही उनकी प्रथम कविता सन् 1927 में कॉलेज पत्रिका में प्रकाशित हुई तब से अनवरत रूप से साहित्य सृजन से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। सन् 1987 में आपकी मृत्यु हो गई।

भग्नदूत, चिन्ता, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, कितनी नावों में कितनी बार, कविता संग्रह है तो शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी प्रमुख उपन्यास हैं। इसके अलावा कहानियाँ, निबंध, यात्रावृत्त, आदि अनेक क्षेत्रों में लेखनी चलाई है। अज्ञेय की प्रारम्भिक रचनाओं में छायावादी वैयक्तिकता, निराशा, वेदना का भाव मिलता है तो प्रयोगवादी रचना चिन्ता से नया मोड़ लेती भाव और सौन्दर्य बोध के नवीन स्तरों तथा आयामों की खोज करती है। जीवन के प्रति प्रभाव देने वाला- गहरा तीखा व्यंग्य, बिखरे भाव चित्र, बौद्धिकता, मानवतावादी दृष्टिकोण- नई छंद योजना, नया शिल्प इनके काव्यात्मक सौन्दर्य को दिखाता है।

विविधा की दृष्टि से अज्ञेय का विविध दृष्टिकोण ही व्यापक है। अज्ञेय जी हिन्दी साहित्य के अप्रतिम कलाकार हैं।

काव्य में जीवन की समग्रता को प्रकट करने के अवसर प्रबंध काव्य में अधिक रहते हैं। जबकि मुक्तक काव्य तथा गीत काव्य में कोई एक भाव का एक चित्र ही अविलम्ब हो पाता है। विविधा में संकलित कविताएँ इसी तरह यद्यपि एक भाव का एक विचार को व्यक्त करती हैं किन्तु इनका समावेश जीवन की व्यापकता का बोध कराने वाला है।

अज्ञेय द्वारा लिखित 'हमारा देश' कविता उन ग्रामवासियों को लक्ष्य कर लिखी गई है जो बहुसंख्यक रूप में झोंपड़ों में अपना सारा जीवन व्यतीत करते हैं। इन ग्रामवासियों के मनोरंजन के साधन ढोल-मंजीरे और बाँसुरी हैं। शहर वासियों को कवि ने वासना का लालची कहा है। ये शहरवाले विषैले सर्प की तरह है जो अपनी वासना की भूख मिटाने ग्रामवासियों को साधन बनाते हैं। कवि कहता है कि गाँव में रहने वाली अल्हड़ बालाओं को देखकर शहरी सभ्यता इनकी दुर्दशा पर आँसू नहीं बहाती बल्कि हँसी उड़ाती है।

कवि ने ग्रामों की दुर्दशा और शहरी सभ्यता पर तीखा व्यंग्य किया है।

'घर की याद' कविता कवि ने अपने जेल प्रवास के समय लिखी थी। जेल में उन्हें घर से अलग रहने की पीड़ा सालती है। पारिवारिक जीवन के सुख-दुःख और आत्मीय प्रेम की स्मृति जेल में भी उन्हें परिवार के प्रति संवेदनशील बनाए रखती है। कवि के स्मृति संसार में उसके परिजन एक-एक करके शामिल होते जाते हैं। घर की याद आते ही कवि भाव विह्वल हो जाता है। वह अपनी पीड़ा छिपाने का प्रयास करता है क्योंकि उसे लगता है कि उसके दुःखी होने की खबर से उसके परिजन भी दुःखी होंगे। परिवार से अलग व्यक्ति की कोमल भावनाओं की सार्थक व मार्मिक अभिव्यक्ति इस कविता की विशिष्टता है।

हमारा देश

इन्हीं तृण-फूल छप्पर से
ढके ढुलमुल गँवारू
झोपड़ों में ही हमारा देश
बसता है।

इन्हीं के ढोल-मादल बाँसुरी के
उमगते सुर में
हमारी साधना का रस
बरसता है।

इन्हीं के मर्म को अनजान
शहरों की ढँकी लोलुप विषैली
वासना का साँप
डँसता है।

इन्हीं में लहराती अल्हड़
अयानी संस्कृति की दुर्दशा पर
सभ्यता का भूत
हँसता है।

घर की याद

कवि परिचय :

भवानी प्रसाद मिश्र

भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म होशंगाबाद जिले के टिगरिया गाँव में सन् 1913 में हुआ था। बचपन से ही वे कविताएँ लिखने लगे थे। उनके पिता एवं बड़े भाई उनके प्रेरणा स्रोत बने। बाद में गाँधी जी के संपर्क में आने के कारण वे गांधीवादी दर्शन से प्रभावित हुए और वही मानवतावादी चिंतन उनके काव्य में अभिव्यक्त हुआ है उन्होंने साहित्य सेवा में अपना जीवन ग्रापन किया। 'गीतफरोश' चकित है दुख, अंधेरी कविताएँ, गांधी पंचशती, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, व्यक्तिगत, परिवर्तन के लिए और अनाम तुम आते' आदि उनकी काव्य रचनाएँ हैं। इनकी मृत्यु सन् 1985 में हो गई।

सहजता, सरलता से भावों की मार्मिक अभिव्यक्ति मिश्र जी के काव्य में मिलती है। व्यक्ति, समाज और देश उनके काव्य का मूलाआधार रहे हैं और इन्हीं की सच्ची भावनाएँ उन्होंने अपने काव्य में अभिव्यक्त की है। प्रकृति की मनमोहक छटा भी उन्हें आकर्षित करती रही है। 'सतपुड़ा के घने जंगल' इस संदर्भ मे उल्लेखनीय है। स्वभावत: भावुक होने के कारण उन्होंने सभी के दु:खों को पहचाना और अपनी वाणी दी। अपनी जिजीविषा समाज परक चेतना, उदात्तवृत्ति के कारण उन्होंने जीवन का असाधारण चित्रण किया है। गांधीवादी दर्शन से भाव पक्ष अत्यंत समृद्ध बन पड़ा है। सीधी सरल किंतु प्रभावपूर्ण भाषा, अनुप्रास का सुंदर प्रयोग और सकारत्मकता उनकी कला पक्ष की समृद्धता को व्यक्त करता है। उनकी भाषा सामान्य जन जीवन की रोजमर्रा की भाषा है जो अपनी साधारणता में ही असाधारण है। कला पक्ष को सजाने, संवारने का प्रयत्न नहीं बल्कि जो अनायास आ गया वहीं अपने आप में संवर गया। शिल्पगत सादगी उनकी देन है। केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार, मध्यप्रदेश सरकार का शिखर सम्मान, उन्हें प्राप्त हुआ है।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग में मिश्र जी का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

आज पानी गिर रहा है,
बहुत पानी गिर रहा है,
रात भर गिरता रहा है,
प्राण मन घिरता रहा है,

बहुत पानी गिर रहा है,
घर नज़र में तिर रहा है,
घर कि मुझसे दूर है जो,
घर खुशी का पूर है जो,

घर कि घर में चार भाई,
मायके में बहिन आई,
बहिन आई बाप के घर,
हाय रे परिताप के घर!

घर कि घर में सब जुड़े हैं,
सब कि इतने कब जुड़े हैं,
चार भाई चार बहिनें,
भुजा भाई प्यार बहिनें,

आज गीता पाठ करके,
दंड दो सौ साठ करके,
खूब मुगदर हिला-हिला कर,
मूठ उनकी मिला कर,

जब कि नीचे आए होंगे,
नैन जल से छाए होंगे,
हाय, पानी गिर रहा है,
घर नज़र में तिर रहा है,

पाँचवाँ मैं हूँ अभागा,
जिसे सोने पर सुहागा,

और माँ बिन-पढ़ी मेरी,
दु:ख में वह गढ़ी मेरी
माँ कि जिसकी गोद में सिर,
रख लिया तो दुख नहीं फिर,

माँ कि जिसकी स्नेह-धारा,
का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता,
जो कि उसका पत्र पाता।

पिता जी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
जो अभी भी दौड़ जाएँ,
जो अभी भी खिलखिलाएँ,

मौत के आगे न हिचकें,
शेर के आगे न बिचके,
बोल में बादल गरजता,
काम में झंझा लरजता,

चार भाई चार बहिनें,
भुजा भाई प्यार बहिनें,
खेलते या खड़े होंगे,
नज़र उनको पड़े होंगे।

पिता जी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
रो पड़े होंगे बराबर,
पाँचवें का नाम लेकर,

पिता जी ने कहा होगा,
हाय, कितना सहा होगा,

पिता जी कहते रहे हैं,
प्यार में बहते रहे हैं,

आज उनके स्वर्ण बेटे,
लगे होंगे उन्हें हेटे,
क्योंकि मैं उन पर सुहागा
बँधा बैठा हूँ अभागा,

और माँ ने कहा होगा,
दुख कितना बहा होगा,
आँख में किसलिए पानी
वहाँ अच्छा है भवानी

वह तुम्हारा मन समझकर,
और अपनापन समझकर,
गया है सो ठीक ही है,
यह तुम्हारी लीक ही है,

पाँव जो पीछे हटाता,
कोख को मेरी लजाता,
इस तरह होओ न कच्चे,
रो पड़ेंगे और बच्चे,

और कहना मस्त हूँ मैं,
कातने में व्यस्त हूँ मैं,
वज़न सत्तर सेर मेरा,
और भोजन ढेर मेरा,

कूदता हूँ खेलता हूँ,
दुख डट कर ठेलता हूँ,
और कहना मस्त हूँ मैं,
यों न कहना अस्त हू मैं,

कहाँ, मैं रोता कहाँ हूँ,
धीर मैं खोता, कहाँ हूँ,

हे सजीले हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लेना वे न बरसे,
पाँचवें को वे न तरसे,

मैं मज़े में हूँ सही है,
घर नहीं हूँ बस यही है,
किंतु यह बस बड़ा बस है,
इसी बस से सब विरस है,

किंतु उनसे यह न कहना,
उन्हें देते धीर रहना,
उन्हें कहना लिख रहा हूँ,
उन्हें कहना पढ़ रहा हूँ,

काम करता हूँ कि कहना,
नाम करता हूँ कि कहना,
चाहते हैं लोग कहना,
मत करो कुछ शोक कहना,

हाय रे, ऐसा न कहना,
है कि जो वैसा न कहना,
कह न देना जागता हूँ,
आदमी से भागता हूँ,

कह न देना मौन हूँ मैं,
खुद न समझूँ कौन हूँ मैं,
देखना कुछ बक न देना,
उन्हें कोई शक न देना,

अभ्यास

बोध प्रश्न-

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'झोपड़ों में ही हमारा देश बसता है', से क्या आशय है?
2. कवि ने वासना को साँप क्यों कहा है?
3. कवि को घर की याद क्यों आ रही है?
4. कवि घर पर किसके द्वारा संदेश भेजना चाहता है?

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि ने वासना के पहले कौन-कौन से विशेषण प्रयुक्त किये हैं और क्यों?
2. 'सभ्यता का भूत और संस्कृति की दुर्दशा' के विषय में अपने विचार लिखिए।
3. 'कवि ने अपनी माँ की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है?
4. पिताजी की सक्रियता को कवि ने किस रूप में देखा है?
5. कवि अपने आपको अपने पिता के सामने किस रूप में रखना चाहता है?

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हमारी ग्रामीण संस्कृति को शहरी बुराइयाँ प्रभावित कर रही हैं, स्पष्ट कीजिए।
2. निम्नलिखित पंक्तियों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए-

   अ. **इन्हीं के मर्म को अनजान**
   शहरों की ढँकी लोलुप विषैली
   वासना का साँप डँसता है।

   ब. **इन्हीं में लहराती अल्हड़**
   अयानी संस्कृति की दुर्दशा पर
   सभ्यता का भूत हँसता है।

   स. **पाँव जो पीछे हटाता, कोख को मेरी लजाता।**
   इस तरह होओ न कच्चे, रो पड़ेंगे और बच्चे,

3. हमारा देश कविता के काव्य सौन्दर्य पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. 'हमारा देश' शीर्षक से देश के विविध पक्षों जैसे सामाजिक, प्राकृतिक, भौगोलिक क्षेत्रों की जानकारी एकत्र कर अपनी डायरी में लिखिए।
2. अज्ञेय ने 1943 में प्रथम तार सप्तक का सम्पादन किया था। इसमें सात कवियों का समूह था। शिक्षक की सहायता से इन कवियों के नामों का पता कीजिए एवं द्वितीय तथा तृतीय 'तार सप्तक' की जानकारी भी प्राप्त कीजिए।
3. भवानी प्रसाद मिश्र की रचनाओं की सूची तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

परिताप = दुख, क्लेश, रंज, झंझा = तेज आंधी जिसके साथ वर्षा हो, तूफान, मुगदर = प्राचीन काल का एक अस्त्र
भवानी = दुर्गा अतीत = बीता हुआ कल
तृण = घास, गँवारू = ग्रामीण, मादल = वाद्ययंत्र (ढोल), लोलुप = लालच, वासना = कामना, इच्छा